प्रथम अध्याय

''मोहन राकेश : व्यक्ति एवं कृति परिचय''

प्रथम अध्याय

मोहन राकेश : व्यक्ति एवं कृति परिचय

प्रास्ताविक -

आधुनिक हिंदी कथा - साहित्य में अपने परिवेश से प्रतिबद्ध रचनाकारों में मोहन राकेश का नाम अविस्मरणीय है । राकेश के कथा साहित्य में उनके व्यक्तित्व की झलक दिखाई देती है । कोई भी साहित्यकार अपने जीवन में आए संघर्ष एवं सुख - दु:ख को ही अपनी कलम की सहायता से अभिव्यक्त करता है । प्राय: प्रत्येक साहित्यकार के व्यक्तित्व की झलक हमें उसके कृतित्व में दिखाई देती है । मोहन राकेश भी उन्हीं में से एक हैं ।

मोहन रोकश का साहित्य आज भी हिंदी साहित्य मे मील का पत्थर माना जाता है । किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता । लेखक के विचार, उसकी भावनाएँ और संवेदनाएँ उसके जीवन की प्रतिछाया होती है । कोई भी लेखक अपने समय की परिस्थितियाँ एवं यथार्थ से प्रेरित होकर ही सार्थक साहित्य सृजन कर सकता है । अत: रचनाकार के साहित्य का वस्तुपरक मूल्यांकन करने के लिए उसकी विभिन्न परिस्थितियों, अनुभवों, प्रेरणाओं और विचारों आदि की जानकारी आवश्यक हो जाती है ।

हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार मोहन राकेश भी इस साहित्यिक धारणा से अलग नहीं हैं । राकेश जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का सही आकलन उनके कृतित्व को समझने के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी हो जाता है । राकेश जिस वातावरण में पले, उनको जिन संघर्षों का सामना करना पड़ा उन सारे प्रसंगों और घटनाओं का प्रतिबिंब उनकी रचानाओं में दिखाई देता है । अतएव उनके जीवन एवं व्यक्तित्व की संक्षिप्त झलक देखनी यहाँ अनिवार्य हो जाती है । उनके जीवन और साहित्य लेखन के बारे में गिरिश रस्तोगी ने लिखा है - " राकेश की जिन्दगी की हकीकत उसके साहित्य की भी हकीकत है ।" [1]

1.1 जन्म -

हिंदी साहित्य जगत को अपने लेखन से समृद्ध करनेवालों में मोहन राकेश का नाम अविस्मरणीय है । इस महान लेखक का असली नाम मदन मोहन गुगलानी था । उनका जन्म अमृतसर में एक सुसंस्कृत परिवार में हुआ । उनके जन्म के बारे में विमला कुमारी पंड़िता ने लिखा है - " कहानी, उपन्यास और नाटकों के सर्जक मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी सन् 1925 ई. में हुआ था ।" [2]

उनका असली नाम उन्होंने बदलकर प्रचलित नाम मोहन रोकश रख दिया था । यह नाम उनकी दीदी का सुझाया हुआ नाम था । इसी नाम से वे हिंदी साहित्य जगत में ख्यातकीर्त रहे और अमर भी हो गए ।

1.2 बाल्यावस्था -

मोहन राकेश का बाल्य काल पंजाब के अमृतसर और जालंधर जिले में व्यतीत हुआ । मोहन राकेश जिस घर में रहते थे वह घर बाजार में होने के कारण वहाँ शोर रहता था । निजी परिस्थितियों ने ही मोहन राकेश को भावुक बनाया था । साथ ही साथ उनमें अत्याधिक लापरवाही भी परिलक्षित होती थी । घर में किसी न किसी कारण को लेकर झगड़ा चलता था । बचपन में ही उन्हें घरवालों से सीख मिला करती थी कि बाहर का कोई आदमी विश्वास और स्नेह का पात्र नहीं होता । बाहर के बच्चों में बुरी आदतें होती हैं ।

1.3 पारिवारिक परिवेश -

मोहन राकेश का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था । उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । साथ ही सोलह वर्ष की आयु में राकेश के पिताजी की मृत्यु हो गई थी । इसी कारण सोलह वर्ष की आयु में जिंदगी ने राकेश को एक चौखट में फिट कर दिया था । राकेश को कम उम्र में ही संघर्षों का सामना करना पड़ा । अमृतसर में राकेश जिस घर में रहते थे वह किराये का था । वहाँ का वातावरण अच्छा नहीं था । स्वयं राकेश अपनी डायरी में लिखते हैं - " मेरा जन्म अमृतसर की जिस गली में हुआ, वहाँ ताजा हवा तक तो पहुँच नहीं पाती थी । हमारा घर अंधेरा तो था ही, साथ ही साथ वह काफी छोटा भी था ।" [3]

राकेश के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा । जब पिता की मौत हुई तब उस मकान मालिक के लड़के ने पिता की लाश को मकान का किराया अदा करने के बाद ही उठाने दिया । इसी प्रसंग से राकेश की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है । पिता की मृत्यु के पश्चात माँ, बहन तथा छोटे भाई की जिम्मेदारी उन्हीं पर आ पड़ी । आर्थिक तणाव के कारण उनके घर में हमेशा झगड़े होते थे । घर का वातावरण धार्मिक होने साथ - साथ अंधविश्वास पूर्ण भी था । किसी अन्य जाति के लोगों से संबंध रखने के लिए उनकी दादी विरोध करती थी । इसी कारण उनका दम घुटता था । दूसरी ओर उनके पिताजी की साहित्यिक रूचि के कारण वे हमेशा नई - नई किताबें खरीदते थे । इसी कारण राकेश घर में बैठकर हमेशा कुछ - न - कुछ पढ़ते रहते थे । इसी के परिणाम स्वरूप उनकी किताबों से मित्रता बढ़ती जा रही थी।

1.4 माता -

राकेश अपनी माँ के अम्मा कहकर पुकारते थे । उनका असली नाम था बचन । अम्मा का अपने बेटे पर असीम विश्वास था । वह अत्यंत निच्छल और सहनशील नारी थी । अम्मा सुसंस्कृत एवं विशाल हृदय की नारी थी । राकेश जो भी कार्य करते थे उनपर उनकी माँ मौन रखती थी । इसी कारण राकेश जब अनीता को ले आये तब उन्हें भी बहु का आदर और स्नेह दिया था । अपनी माँ के व्यक्तित्व के बारे में स्वयं राकेश लिखते हैं - '' अम्मा धरती की तरह शांत रहती है । मेरे हर आवेश, उद्वेग को वे धरती की तरह ही सह लेती है । इतनी स्थिरता, इतनी डेड़िकेशन इससे बड़ा योग और क्या हो सकता है ? और इसी पर भी वे अपने को मूर्ख, नासमझ और कमजोर कहती है ? माँ के त्याग में कहीं त्याग की Consciousness नहीं है और इसी बात में माँ की महत्ता है । उनकी सहिष्णुता में तनिक भी तो शिकायत नहीं होती । सच, मेरी मां बहुत बड़ी है - बहुत ही बड़ी ।'' [4] संयुक्त परिवार में रहने के कारण उनकी माँ को संमिश्र सुख - दु:खों का सामना करना पड़ा था । अपने जीवन में उन्हें कभी इतना सुख नहीं मिला जिससे वे निश्चिंत रहे । उन्होंने अपना सारा जीवन अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करके बिताया । उनके जीवन का आधार उनके पति थे । लेकिन पति की मृत्यु के बाद उनका आधार टूटा और इससे उनका मनोधैर्य टूट गया । माँ के व्यक्तित्व से राकेश जी विशेष प्रभावित रहें । जयदेव तनेजा लिखते हैं-

"राकेश के जीवन को बनाने, चलाने और सर्वाधिक प्रभावित करने में उनकी माँ (अम्मा) की केन्द्रीय भूमिका रही है।"[5] माँ की सरलता, उदारता और दयालुता ने उनको मानवतावादी इन्सान बना दिया। माँ से उन्हें अपनत्व, ममत्व, अमर्याद प्यार और विश्वास मिला। राकेश की माँ एक आधारस्तंभ थी जिससे उन्हें सुरक्षा, सांत्वना एवं सही दिशा मिलती थी। लेकिन वह सुरक्षा अचानक 16 अगस्त, 1979 को राकेश से छिन ली। जब उनकी माँ का देहांत हो गया तब राकेश पूरी तरह टूट गए। इस तरह राकेश को दिशा देनेवाली माँ चल बसने के कारण राकेश दिशाहीन हो गए।

1.5 पिता -

मोहन राकेश के पिता का नाम 'कर्मचंद गुगलानी' था। वे एल.एल.बी. होने के नाते वकालात करते थे। गुगलानी परिवार पर वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव था। उनके पिता स्वयं वकील होते हुए भी शास्त्र एवं साहित्य में निष्णात थे। उनके कमरे में वकालात के अतिरिक्त अन्य विषयों की पुस्तकों से भरी अलमारियाँ थीं। राकेश के पिताजी को संगीत में भी अधिक रूचि थी। राकेश के घर उनके पिताजी के साथ उनके दोस्त भी आते थे और घर में साहित्यिक चर्चाएँ भी चलती थीं। उन मित्रों में उपेंद्रनाथ अश्क भी एक थे। इसी कारण राकेश जी का प्रारंभिक काल साहित्यिक वातावरण में बीत गया। स्वयं राकेश लिखते हैं कि मेरे लेखन में रूचि उत्पन्न होने का सबसे अधिक श्रेय मेरे पिताश्री को है। जिनके कारण घर में साहित्यिक माहौल बना रहता था।

राकेश के पिताजी का स्वभाव शांत और सरल होने के कारण पेशे की चालाकी वे अपना नहीं सके। इसी कारण उन्हें आर्थिक विषमताओं सामना बुरी तरह करना पड़ा। राकेश के पिता में एक और गुण दिखाई देता है कि वे अपने निजी दुःखों को भूल जाने के लिए अपने मित्रों के साथ रात देर तक गप्पे हांकते बैठते। राकेश के पिता छोटों के साथ भी बड़ों जैसा व्यवहार करते थे। इसके बारे में स्वयं राकेश कहते हैं - "जब मैं बारह वर्ष का था तो वे मुझसे दोस्त सा व्यवहार करने लगे।"[6] राकेश सोलवाँ साल पार कर रहे थे तब 8 जनवरी, 1941 को पिता का स्वर्गवास हो गया। यह राकेश के संस्कारक्षम मन पर पड़ा बड़ा कठोर आघात था।

1.6 भाई - बहन -

राकेश जी को एक बड़ी बहन और एक छोटा भाई था। उनकी बहन का नाम कमला और छोटे भाई का नाम वीरेंद्र था। उसे वे प्यार से वीरेन कहकर पुकारते थे। उनकी बहन कमला दिल्ली के एक स्कूल में हिंदी

की अध्यापिका बनी थी । वह राकेश से डेढ़ साल बड़ी थी । कमला बहुत होशियार थी । यह राकेश की डायरी से भी स्पष्ट होता है । वे लिखते हैं - "यह मेरी बहन शास्त्री प्रभाकर है - कभी सभाओं में भाषण दिया करती थी - और दो बार महिला हिंदी संमेलन की प्रधान रह चुकी है ।"[7] कमला के वैवाहिक जीवन की ट्रेजेड़ी के लिए राकेश खुद को उत्तरदायी मानकर दुःखी हुआ करते थे ।

राकेश ने अपने पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई वीरेन को बड़े प्यार से पाला और बड़ा किया था । पिता की मृत्यु समय वीरेन की उम्र साढ़े चार साल की थी । राकेश की शादी के बाद घर की घुटन के कारण भाई वीरेन मुंबई चला गया । राकेश वीरेन को हर वक्त साथ रखने का प्रयास करते थे । लेकिन वीरेन नहीं रहा । इसके बारे में अनीता राकेश ने लिखा है - "दोनों भाई कभी एक नज़रिए से नहीं देख सके ।"[8] वीरेन का कहना था कि राकेश ने अपने मित्रों का जितना भला किया है उतना भला उन्होंने न कभी अपने भाई का चाहा है और न किया है । सन् 1947 में घटी दो घटनाओं ने राकेश को बहुत प्रभावित किया । इनमें एक थी बड़ी बहन की मृत्यु और दूसरी थी भारत देश का विभाजन ।

1.7 शिक्षा -

राकेश के घर में साहित्यिक वातावरण पहले से ही था । राकेश ने अपने पिता के प्रभाव से संस्कृत का अध्ययन किया था । उनकी आरंभिक शिक्षा अमृतसर के हिंदू कॉलेज में हुई । बाद में वे लाहौर के ओरिएंटल कॉलेज में पढ़ने के लिए गए थे । वहाँ उन्होंने सन् 1941 में सोलह साल की उम्र में ही 'शास्त्री' की उपाधि पायी थी । उसके बाद उन्होंने अंग्रेजी में बी.ए. किया और बाद में सत्रह साल की उम्र में वे लाहौर गये । लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय से सन् 1944 में, उन्नीस साल की उम्र में उन्होंने संस्कृत में एम्. ए. किया । परंतु राकेश के मन में जब हिंदी में एम्. ए. होने की इच्छा जाग उठी तो तुरंत उन्होंने अपना नाम चंदीगढ़ के पंजाब विश्वविद्यालय में दाखिल किया और सन् 1952 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में एम्. ए. की उपाधि प्राप्त की । इस परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी में आए थे ।

अपनी विद्यार्थी दशा में उन्हें आर्थिक परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ा था । ट्यूशन लेकर जो रूपये मिलते थे उन्हीं पर वे अपना खर्चा चलाते थे । इस प्रकार वे आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते

रहे । लेकिन जब ट्यूशन बंद हो गई तब राकेशजी का पढ़ना मुश्किल हो गया । उसी समय ओरिएंटल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. लक्ष्मण स्वरूप जी की सहायता से उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की । अगर स्वरूपजी की सहायता न मिलती तो उनकी पढ़ाई अधूरी ही रह जाती ।

1.8 अस्थिर नौकरियाँ -

राकेश की स्वतंत्र चेता बुद्धि ने उन्हें कभी किसी एक नौकरी या व्यवसाय से अधिक समय नहीं बाँध रखा । प्रिंसिपल साहब से मिली स्कॉलरशिप की अवधि समाप्त होते ही उन्हें नौकरी करनी पड़ी । सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी के अनुसार - "राकेश ने अपने जीवन की पहली नौकरी एक फिल्म कम्पनी में शुरु की जब कि वे इक्कीस साल के थे ।" [9]

राकेश ने नौकरी तो आरंभ की लेकिन अपनी स्वतंत्रता - वृत्ति के कारण वे कहीं पर भी ज्यादा दिन नहीं टिके। एक के बाद एक ऐसी अनेक नौकरियाँ की । फिल्म कंपनी की नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें 'सिड़नहोम कॉमर्स कॉलेज' में 'पार्ट टाईम' नौकरी करनी पड़ी । वहाँ उन्हें प्रति माह पचहत्तर रूपये मिलते थे । कुछ दिन नौकरी करने के बाद वहाँ पर भी इस्तीफा दे दिया । बाद में सन् 1947 में मुंबई के 'एल्फिन्स्टन कॉलेज' में 'फुल टाईम लेक्चरर' का काम करने लगे । दो साल नौकरी करने के बाद आंखों की कमजोरी के कारण उन्होंने सन् 1949 में एल्फिन्स्टन कॉलेज से अपने को अध्यापन कार्य से मुक्त किया । उसके बाद कुछ समय वे दिल्ली में बेकार रहे । तदुपरांत 'डी.ए.वी. कॉलेज' में प्राध्यापक नियुक्त हुए । वहाँ पर टीचर्स युनियन की गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया और अधिकारियों की दमन नीति का बराबर विरोध किया । इसी कारण उन्हें वहाँ से हटा दिया गया । तत्पश्चात 'बिशप कॉटन स्कूल' में नौकरी करने लगे । इसी बीच सन् 1950 के अंत में उन्होंने विवाह किया । उसके बाद उन्हें फिर से 'डी. ए. वी. कॉलेज' से वे हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में बुलावा आया । यही उनके जिंदगी की सबसे लंबी नौकरी थी । किंतु उसे भी उन्होंने सन् 1957 के अंत में छोड़ दिया ।

इस प्रकार की अस्थिर नौकरियों की कारण राकेश को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस आर्थिक स्थिति का सामना करने के लिए राकेश ने सन् 1960 में कुछ समय के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में लेक्चररशिप ले ली । किंतु उसे भी जल्द ही छोड़ दिया । फिर सन् 1962 में बेनेट कोलमन एण्ड कंपनी द्वारा दी

गयी अच्छे वेतन की नौकरी स्वीकार की और मुंबई में सुप्रसिद्ध कहानी - पत्रिका 'सारिका' के संपादक बनकर गए । 'सारिका' पत्रिका को नया रंग - रूप देने और उसमें छपनेवाले साहित्य को एक सुव्यवस्थित और नया मोड़ देने में राकेश का बड़ा हाथ रहा है । लेकिन वहाँ भी ज्यादा देर नहीं टिके । सन् 1963 में उन्होंने वहाँ भी त्यागपत्र दे दिया ।

राकेश की नौकरी छोड़ने की आदत को देख डॉ. मीना पिंपलापुरे लिखती हैं - " मोहन राकेश बार - बार नौकरियाँ छोड़ते है, पर यह कोई स्वयं का वरण नहीं है । इसके कई कारण हो सकते हैं । जिनमें प्रमुख हैं उनका स्वाभिमान, जो पूरी तरह समर्पित नहीं हो पाता अथवा संपूर्ण समझौते के लिए तैयार नहीं होता ।" [10]

इस प्रकार उनका इस्तीफा हमेशा उनकी जेब में रहा करता था । राकेश की ऐसी अस्थिर नौकरियों को देखते हुए एक बार धर्मवीर भारती ने कहाँ था कि " राकेश के मुँह से हमेशा त्यागपत्र की गंध आती है ।"[11]

1.9 तणावपूर्ण वैवाहिक जीवन -

मोहन राकेश जिस तरह नौकरी पसंद न होने पर उसे ठुकरा देते थे, उसी तरह पत्नी के बारे में भी वे ऐसा ही किया करते थे । उनके जीवन में पद का त्याग और पत्नी का त्याग, दोनों क्रियाएँ बराबर घटित हुई थीं । वे जिस चीज को चाहते उसे वे बड़ी तीव्रता से प्राप्त करते थे । मोहन राकेश ने अपने जीवन में तीन पत्नियों से विवाह किया था । वे तीन पत्नियाँ हैं - सुशीला, पुष्पा और अनीता अलौक । इनमें से पहले दो विवाह विधिवत थे और तीसरा गंधर्व ।

राकेश का पहला विवाह 10 दिसंबर, 1950 को सुशीला नामक लड़की से हुआ । सुशीला आगरा के 'ट्रेनिंग कॉलेज' में अध्यापिका थी । राकेश ने यह विवाह जान - बूझकर किया था । क्योंकि पत्नी की तनख्वाह पर घर का खर्च चलेगा और वे लेखन में मग्न रहेंगे । लेकिन यह बात झूठ निकली । राकेश के पास जब तक अपने प्रॉविडेंट फंड़ की राशि थी तब तक वह उनके साथ रही । प्रॉविडेंट फंड खत्म होते ही उन दोनों के संबंधों में दरार पड़ने लगी । साथ ही साथ सुशीला में अहं भी था कि वह उनसे ज्यादा पढ़ी लिखी है और उनसे ज्यादा कमाती भी है । इसी वजह से दोनों में तणाव पैदा होता रहा और इस घटना की गहरी चोट राकेश के संवेदनशील मन को पहुँची । उनका यह प्रथम विवाह - संबंध सिर्फ डेढ़ साल तक ही सुरक्षित बना रहा । लेकिन

आगे यह रिश्ता उन्होंने और पाँच साल तक बनाए रखा । इसी बीच सुशीला बच्चे की माँ बननेवाली है यह जानकर राकेश को खुशी के बदले दु:ख ही हुआ । क्योंकि राकेश सुशीला से तलाक लेना चाहते थे और वह इस विवाह विच्छेद (तलाक) को राजी नहीं थी । इस कलह युक्त वातावरण से ऊब कर राकेश का छोटा भाई वीरेन घर छोड़कर मुंबई चला गया था । ऐसी स्थिति में दोनों एक होना नामुमकिन था । अंत में सुशीला तलाक लेने के लिए राजी हुई और 12 अगस्त, 1957 को तलाक लेकर दोनों एक - दूसरे से हमेशा के लिए दूर हो गए । नवनीत यह सुशीला से पैदा हुआ उनका बेटा था । जब राकेश को नवनीत की याद आती तो वे असहनीय पीड़ा को बर्दाश्त नहीं कर पाते । इस प्रथम विवाह से राकेश को जो पछतावा हुआ वह उन्होंने अपनी 10 दिसंबर, 1957 को लिखी डायरी में व्यक्त किया है । वे लिखते हैं - " आज से सात साल पहले, आज ही के दिन अपना ब्याह हुआ था । वह दिन, वह एक दिन यदि जिंदगी में होता ।" [12]

प्रथम विवाह तो असफल रहा । लेकिन राकेश नाराज नहीं हुए । उन्होंने अपना दूसरा विवाह 9 मई, 1960 को पुष्पा के साथ किया, जो उनके मित्र की बहन थी । इस विवाह से पहले पुष्पा के साथ एक - दो बातें भी की थी । फिर भी राकेश को फँसाया गया । पत्नी मानसिक रूप से विक्षिप्त थी । वह हँसते - हँसते बेहाल हो जाती थी और रोते समय देवी का रूप धारण कर रोती थी । इस प्रकार सुशीला और पुष्पा के गुणों में बहुत अंतर था । पुष्पा में विनय और समर्पण था । इस प्रकार दोनों में दु:ख और एकरूपता की भावना नहीं थी । दु:ख और तड़प होने के कारण उनका यह दूसरा विवाह भी असफल रहा ।

इसके बाद राकेश ने अपना तीसरा विवाह उनकी फैन चंद्राजी अलौक की बेटी अनीता अलौक से किया । इस विवाह के बारे में उनकी पत्नी अनीता लिखा है - " 22 जुलाई को हमने शादी कर ली है ।"[13] यह राकेश का गंधर्व विवाह था । इस प्रकार राकेश ने अनीता अलौक के साथ 22 जुलाई, 1963 को विवाह किया । यह तीसरा विवाह अनीता की माताजी विरोध होते हुए भी घर से भाग कर किया था । अनीता से मोहन राकेश को एक लड़की और एक लड़का प्राप्त हुआ जिनके नाम क्रमश: पुरवा और शालीन हैं । इन दोनों के रूप में अनीता ने राकेश को प्यार में बाँध डाला और उन्हें जिस घर की तलाश थी, वह उन्हें मिल गया । राकेश अपने दो बच्चों से बहुत प्यार करते थे । अपना अधिकांश समय वे बच्चों को प्यार करने में ही बिताते थे । अनीता ने राकेश को जिंदगी भर साथ दिया था । यह देखकर राकेश अनीता से कहा करते थे - " तूने मेरा रेकार्ड खराब कर दिया है ।

दो साल से ज्यादा मैं किसी औरत के साथ नहीं रहा । पहले मैंने सोचा कि दो - तीन साल के बाद चली जाएगी । लेकिन छ: साल हो गए, तेरे जाने के कोई आसार ही नजर नहीं आ रहे । पहले एक बच्चा - फिर दूसरा - अब तीसरे का इरादा तो नहीं - अच्छा यह सोच के बताना कि कब जा रही है, लेकिन यह बता दे कि बच्चों को लेकर जाएगी या छोड़कर.... ।" [14]

विवाह के बारे में राकेश पर लोग गंदे आरोप लगाते थे कि 'राकेश वस्त्रों की तरह बीवियाँ बदलता है ।' किंतु ऐसी अनेक बातों को सुनकर भी अनीता ने राकेश को अपनाया था ।

1.10 एक अच्छे घर की तलाश

राकेश को एक घर की तलाश थी । जहाँ उन्हें सुख शांति मिले, जहाँ सही मायनों में कोई उनका अपना हो और जहाँ उन्हें सकुन मिल सके । लेकिन वह उन्हें जल्द नहीं मिला । साथ ही उनका एक घर भी नहीं रहा जहाँ वे ज्यादा देर तक रहे । इस संबंध में कमलेश्वर लिखते हैं - " राकेश एक ऐसा नाम था, जिसके पते हमेशा बदलते रहे और जिंदगी के सारे अहम खत उसे रिडारेक्ट होकर देर से मिलते रहे ।"[15] राकेशजी अपने जीवन में जो चाहते थे वह उन्हें मिलता रहा, सिवाय घर के । इस प्रकार उन्हें एक घर की तलाश थी । इसके संबंध में राकेश ने 2 नवंबर, 1958 की डायरी में लिखा है - " आई नीड़ ए होम । Shall I ever have it ?"[16] इस प्रकार उन्हें दो विवाह करके भी जो घर चाहिए था वह नहीं मिला । लेकिन अनीता के साथ तीसरा विवाह करने के बाद उन्हें जो घर चाहिए था, वह अवश्य मिल गया । उसके साथ ही उन्हें पूरी तरह सुख शांति मिली । अनीता से विवाह करने से पहले वे अपनी जिंदगी में घर के कारण अंदर ही अंदर बिखर गए थे । राकेश को सही घर मिलने से पहले उन्हें कई कष्ट उठाने पड़े । कई दु:खद घटनाओं का सामना करना पड़ा । अनीता से शादी के बाद रात को राकेश अनीता से एक ही बात कहते रहे - " मुझे 'घर' चाहिए .. अन्ना 'घर' । मुझे जिंदगी में और सब कुछ मिला .. सिर्फ एक 'घर' ही नहीं मिला । मैं कहाँ - कहाँ इसके लिए नहीं भटका ... क्या - क्या इसके लिए नहीं किया ... लेकिन पता नहीं क्यों 'घर' नाम की चीज मुझसे हमेशा रूसवा रही । दो बार मैंने इसे पाने का विश्वास अपने में भरा और दोनों ही बार मुझे खुद उससे भाग जाना पड़ा । मैं नहीं जानता कि क्या मुझे ही 'घर' से एलर्जी है या कि घर को ही मुझसे एलर्जी है । क्या तुम मेरे लिए एक ऐसा घर बना सकोगी जो मेरे सिर्फ मेरे अनुकूल ही हो ?... मैं एक

बहुत ही दु:खी आदमी हूँ, अन्ना... एक बहुत ही थका हुआ आदमी हूँ । मैं चाहता हूँ कि मुझे अब तुम सँभाल लो ... मुझे और मेरे घर को ... ।"[17] स्पष्ट है कि राकेश को एक अच्छे घर की तलाश थी ।

1.11 मित्र परिवार -

राकेश के जीवन में उनके मित्रों का स्थान महत्त्वपूर्ण था । उनके जीवन में उनके मित्र उनके शरीर का एक हिस्सा थे । मित्रों के कारण राकेश का परिवार बहुत बड़ा बना हुआ था । अपने मित्रों के लिए उनके घर के दरवाजे हमेशा के लिए खुले थे । राकेश के मित्रों में से ज्यादातर प्रसिद्ध साहित्यकार थे । उनके साहित्यिक मित्रों में उपेंद्रनाथ अश्क, डॉ. इंद्रनाथ मदान, राजेंद्र यादव, मन्नू भंडारी, धर्मवीर भारती और कमलेश्वर आदि थे । उनमें से सबसे अति निकट मित्र थे कमलेश्वर । यह कहते हुए अनीता राकेश ने लिखा है - " इनमें अगर उनका कोई सबसे ज्यादा तकलीफ देनेवाला लेकिन आत्मीय मित्र था तो वह एक मात्र कमलेश्वर ही थे । पता नहीं उन्होंने राकेश जी को क्या सुँघा कर रखा हुआ था । राकेश जी खुद भी कहते थे कि अगर जिंदगी में मैंने किसी की ज्यादतियाँ बर्दाश्त की हैं तो वह तुम्हारी (अनीता) हैं और या फिर कमलेश्वर की ।"[18] राकेश के अन्य मित्र भी उनकी तरह ईमानदार थे । ज्यादातर लोग यह मानते थे कि मोहन राकेश अपने मित्रों के लिए जीते थे ।

राकेश अपने हर दोस्त के साथ अलग - अलग तरह से पेश आते थे । उनके हँसते - खिलखिलाते मुख और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के कारण दुश्मन भी उनके दोस्त बन जाते थे । दोस्त भी ईमानदार होने के कारण राकेश उनके साथ आत्मीयता का रिश्ता रखते थे । उनके जीवन में मित्रों का स्थान दूसरे नंबर पर था । उनकी सारी संपत्ति उनके मित्र ही थे । राकेश हमेशा अपने दोस्तों की मदद लेते थे और उनकी भी मदद करते थे । वे जहाँ - जहाँ जाते थे वहाँ - वहाँ उन्हें नये दोस्त मिलते थे । जब एक दिन राकेश दिल्ली में मुसीबत में पड़े तो वहाँ के एक मित्र, जो टैक्सी चलाता था, ने राकेश को मुसीबत से निकाला था । लेकिन राकेश को उस टैक्सीवाले का नाम तक मालूम नहीं था । ऐसी दोस्ती को राकेश कभी नहीं भूले । जब वे दिल्ली जाते तो वे पहले उस टैक्सीवाले से मिलते थे ।

1.12 लेखन की जिज्ञासा -

राकेश जी को बचपन से ही साहित्य के प्रति लगाव था । साथ ही साथ लेखन के प्रति जिज्ञासा भी थी । जब भी उन्हें समय मिलता तो वे जरूर कुछ ना कुछ लिखते रहते थे । आरंभ में राकेश संस्कृत में रचना

करते थे । पर बाद में हिंदी की ओर आकृष्ट हो गए । जब उन्हें अपना लेखन पसंद नहीं आता था तब वे उसे तुरंत फाड़ देते थे या उसमें परिवर्तन करते थे । राकेश जी को अपनी जिंदगी गुजारने के लिए लेखन करना आवश्यक था। इसी कारण लेखन उनकी जिंदगी बन गई थी । इस संबंध में डॉ. गोविंद चातक ने लिखा है - " राकेश का लेखन उनके निजी अनुभवों की देन है, किंतु उनका लेखन वैयक्तिक नहीं है ।"[19] राकेश के जीवन में जगह - जगह पर बिखराव था पर लेखन में संतुलन था । राकेश के लेखन के प्रति कमलेश्वर जी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं - " राकेश लेखन के बल पर इज्जत और ईमानदारी के साथ जीना चाहता था, बड़ी बेतरतीब जिंदगी है मेरे इस दोस्त की पर सतह से नीचे उतरते ही एक जबरदस्त अनुशासन दिखाई पड़ता है । वह अनुशासन है दिमाग का और सृजन का । ऊपरी जिंदगी में वह जितना असंघठित और बिखरा हुआ दिखाई देता है, उतनी ही संघठित और सुव्यवस्थित है उसके लेखन की प्रक्रिया ।" [20]

राकेश ने अपने जीवन में लेखन को प्रथम स्थान दिया था । अपने लेखन का अपनी जिंदगी में क्या स्थान है यह अनीता को बताते हुए वे कहते हैं - " जिंदगी में पहले नंबर पर मेरे लिए मेरा लेखन है, दूसरे नंबर पर मेरे दोस्त और तीसरे नंबर पर तुम (अनीता) - लेकिन तीनों ही मेरे लिए आवश्यक हैं - यह एक ध्रुव सत्य था ।" [21]

राकेश जी सिर्फ व्यवहार में ही नहीं बल्कि अपने लेखन में भी उतने ही ईमानदार थे । उनके जीवन में आर्थिक विषन्नता, अस्थिर नौकरियाँ और अस्थिरता इन सभी उलझनों के कारण वे ज्यादा नहीं लिख सकें । उनका अधिकतर लेखन स्वास्थ्य बिगड़ने से या बाहर रहने कारण अधूरा रहता था । लेकिन राकेशजी के लेखन कार्य में एक विशेषता यह थी कि जो भी रचना किसी काम से अधूरी रहती, वे उसे पहले लिखना आरंभ कर देते थे ।

1.13 ईगो या अहं -

मोहन राकेश के व्यक्तित्व में सबसे प्रबल पक्ष था उनका ईगो या अहं । राकेश के हर कार्य मे उनका ईगो दिखाई देता है । इसी कारण वे किसी के सामने झुकना पसंद नहीं करते थे । अगर किसी के सामने झुक जाते थे तब वहाँ से नीचे गिर जाते थे । इसलिए राजेंद्र पाल ने एक जगह लिखा है कि मैंने राकेश को झुकते देखा है किंतु जहाँ भी वे झुके है वहाँ से भटक गये है । राकेश का यह ईगो उनके अस्तित्व का परिचायक है । राकेश ने अपनी इस आत्महंता प्रवृत्ति का संकेत 20 अक्टूबर, 1967 की डायरी में दिया है - " दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार अपने को ढालना - यह केवल आत्मघात की प्रक्रिया है जो जीवनभर चलती रह सकती है । परंतु कुछ ऐसा

क्रम है रोज की जिंदगी का कि यह सब अनजाने में होता चलता है। रोज एक निश्चय कि आने वाले कल से ऐसा नहीं होने देंगे - और रोज अपने को अगले दिन तक की मोहलत। अपने इस संस्कार को जैसे भी हो, बदलना होगा।"[22]

राकेश इसी ईगो के कारण ही उच्च कोटि के लेखक बन गए। एकाध फैसला करने के बाद उन्हें वापस लेना उनके ईगो के खिलाफ था। इसी अहं के कारण ही वे कोई एक नौकरी ज्यादा देर तक नहीं कर सके। जब उनके अहं को ठेस पहुँचती थी तब वे अपना इस्तीफा देते थे और तुरंत वहाँ से अपने को मुक्त कर देते थे। जब अनीता और राकेश के बीच झगड़ा होता था तब उनके ईगो को ठेस पहुँचती थी। जब भी कहीं अनीता जाने का नाम लेती है तब उन्हें वापस बुलाना उनके ईगो के खिलाफ था। इसी कारण राकेश जिंदगी में कभी सफल हुए तो कभी असफल। इस प्रकार राकेश मे हमेशा एक जबरदस्त अहं रहा। वह कहीं भी उपेक्षित नहीं रहना चाहता था, चाहे घर में पत्नी के साथ हो, चाहे घर से बाहर, चाहे लेखन के रूप में, अपना हक भूला देना उनके स्वभाव में नहीं था। इसी कारण उनके साहित्य में भी बहुत सारे पात्र अहंवादी दिखाई देते हैं।

1.14 ठहाके -

मोहन राकेश के जीवन में उनका ठहाका काफी प्रसिद्ध रहा है। राकेश अपने दोस्तों से घिरे हुए और हँसी ठहाकों में खोए हुए थे। उनके जीवन की ओर देखते समय ठहाकों की चर्चा न करना यह उचित नहीं है। राकेश के ठहाकों के बारे में कमलेश्वर ने लिखा है कि वह हँसता तो तारों पर बैठी चिड़ियाँ पंख फड़फड़ाकर उड़ जाती और राह चलते ऐसे चौंककर देखते जैसे किसी को दिल का दौरा पड़ गया हो। कभी - कभी रेस्तराँ में मैनेजर को चिट भेजनी पड़ती थी कि प्लीज धीरे से .... । राकेश का यह ठहाका हिंदी साहित्य संसार में काफी प्रसिद्ध है।

1.15 सम्मान -

रोकश को अपने जीवन में दो बार सम्मान प्राप्त हुए है। प्रथम सम्मान सन् 1959 में राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक को भारत सरकार की संगीत अकादमी में सर्वोकृष्ट हिंदी नाटक घोषित किया।

दूसरा पुरस्कार उन्हें सन् 1971 में संगीत नाट्य अकादमी द्वारा उनके संपूर्ण नाट्य कृतित्व एवं नाट्य सेवा के लिए 'नाट्य लेखन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

1.16 मृत्यु -

राकेश बचपन में ही मौत का अर्थ जानने का बहुत कुतूहल रखते थे । वे अपने श्याम चाचा से पूछते थे " भा, जी मौत क्या होती है ?" "मौत के बाद क्या होता है ?" [23]

इस तरह मौत की पूछताछ करनेवाला ही 3 दिसंबर, 1972 में हृदय गति रूक जाने के कारण इस हमेशा के लिए यह संसार छोड़कर चला गया । मृत्यु के समय उनकी आयु लगभग 48 वर्ष के आसपास थी । राकेश के जाने बाद ऐसा लगता है, वह अपनी अस्थिरता के कारण ही नहीं, तो अपनी स्वतंत्रचेता बुद्धि के कारण किसी नई व्यवस्था की तलाश में जिंदगी से इस्तीफा देकर चला गया है । मोहन राकेश की मृत्यु के बारे में अनीता राकेश लिखती हैं - "राकेश जी चले गये थे - इसका दु:ख इसलिए इतना नहीं था कि मुझे और बच्चों को अकेला छोड़ गये .. बल्कि इसलिए की उन्हें जीने का शौक था ... उन्हें जिंदगी से बहुत मोह था । वही एक व्यक्ति था जिसे जीना आता था, जिसने लोगों को जीना, हँसना, खेलना सिखाया था ।" [24]

राकेश के चले जाने के बाद ये सारा हिंदी साहित्य संसार अधूरा ही लगने लगा था । गिरिश रस्तोगी अनुसार - " अगर अचानक ही 3 दिसंबर, 1972 को उनका देहांत न हो गया होता तो संभवतः हिंदी को उन्होंने और अधिक सशक्त, सर्जनात्मक अनुभव से युक्त नाटक दिए होते ।"[25] साथ ही साथ उपन्यासों पर भी अपनी कलम चलाई होती । अनीता राकेश कहती है कि राकेश जी सबको आधा - अधूरा छोड़ गये । यह भी गलत है ।

राकेश ने इस संसार से इस्तीफा तो ले लिया लेकिन उनका मित्र परिवार काफी दु:खी हुआ । साथ ही साथ हिंदी साहित्य में उनकी कमी महसूस हुई । राकेश के निधन पर भारत की प्राय: सभी पत्रिकाओं ने उनपर विशेष लेख प्रकाशित किए और 'सारिका', 'एनैक्स', 'नटरंग' आदि कई पत्रिकाओं ने विशेष स्मृति अंक भी निकाले थे । कई नाटक संस्थाओं ने राकेश के नाटक खेलकर अपनी श्रद्धांजली अर्पित की । राकेश के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए परिचय देते हुए कमलेश्वर लिखते हैं - "अगर कहीं एक ऐसा शख्स दिखाई पड़े जो सिल्क की निहायत लंबे कालर वाली कमीज पहने हो, जिसके कफ कोट की बाहों से छ: अंगरू बाहर निकले हो और उनमें एकदम पुरानी चाल के कफ - बटन हो, जिसकी टाई की गांठ ढीली मुट्ठी की तरह गर्दन में बेतरतीबी से कसी हो, कीमती कपड़ों की पैंट जैसे पहनने वाले से पनाह माँग रही हो और जो गोल्फ फ्लेक की सिगरटे जला - जला कर खा

रहा हो और माचिस की तीलियाँ और राख और टुकड़े निहायत साफ सुधरी और सजी जगहों में फैलता जा रहा हो तो और बात - बात पर आसमान फाड़ ठहाके लगाता हो और लेखक के बजाय किसी बार का रईस, पर पहली नजर में एकदम गावदी प्रोपराइटर लगता हो तो समझ लीजिए कि वह राकेश है ।" [26]

राकेश के व्यक्तित्व तथा जिंदगी के बारे में डॉ. गोरधन सिंह लिखते हैं - "राकेश की व्यक्तिगत जिंदगी को करीब से देखने पर प्रतीत होता है कि मानवीय संबंधों के प्रति गहरी पीड़ा और आक्रोश उनमें था । लगता है संबंधों की ट्रेजेड़ी को राकेश ने कही अधिक झेला था ।"[27]

1.2 कृतित्व -

किसी भी लेखक या कवि के व्यक्ति परिचय को देखने के बाद कृति परिचय की ओर नजर डालना भी आवश्यक है । क्योंकि प्राय: व्यक्तिगत जीवन से उनका साहित्य प्रभावित होता है । मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण उन्होंने अपनी लेखनी अनेक विधाओं पर चलाई । अपने युग के प्रतिष्ठित और प्रतिभा-संपन्न साहित्यकारों में राकेश नाम महत्त्वपूर्ण है । भले ही राकेश जी ने विपुल न लिखा हो, लेकिन जो लिखा है वह बहुत मौलिक और गहराई से लिखा है । पहले पहल उनकी ओर एक सशक्त नाटककार के रूप में देखा जाता था, लेकिन उन्होंने नाटक के साथ - साथ सभी विधाओं को अपनी लेखनी से पल्लवित किया है । राकेश के साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए कृष्ण कुमार लिखते हैं - " स्वातंत्र्योत्तर स्थितियों में हमारा जनमानस, हमारी जिंदगी, कहाँ से कहाँ आ गई है इसकी सही 'विटनेस' मोहन राकेश का साहित्य है ।"[28] आगे यह भी लिखते हैं कि "वास्तव में मोहन राकेश का जीवन और साहित्य एक दूसरे का पर्याय है । उन्होंने जो जिया उसे ही कलात्मक अभिव्यक्ति दी ।"[29] यहाँ राकेश द्वारा लिखित साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है ...

1.2.1 कहानी साहित्य -

राकेश ने बड़ी संख्या में कहानियाँ लिखी हैं । एक प्रकार से यह उनके कृतित्व का प्रारंभिक माध्यम है । कमलेश्वर के अनुसार मोहन राकेश की पहली लिखित कहानी 'नन्ही' और पहली प्रकाशित कहानी 'भिक्षु' है । प्रथम कहानी 'नन्ही' में एक छोटी लड़की का चित्रण किया है, जिसकी माँ मर चुकी है । राकेश की पहली प्रकाशित कहानी 'भिक्षु' का प्रथम प्रकाशन 'सरस्वती' पत्रिका में भाग 46 में हुआ था । इसका प्रकाशन

काल सन् 1946 है । " दो राहा " यह कहानी राकेश को साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा दिलानेवाली कहानी ठहरी । उसके बाद 'मलबे का मालिक' नामक कहानी प्रकाशित हुई । इसी कहानी के कारण कहानीकार के रूप में उनका काफी नाम हो गया । अभी तक उनके निम्नलिखित कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं --

अ.नं.	कहानी संग्रह	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	इन्सान के खण्डहर	प्रगति प्रकाशन, दिल्ली	1950
2.	नये बादल	भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी	1957
3.	जानवर और जानवर	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1958
4.	पाँच लम्बी कहानियाँ	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1960
5.	एक और जिंदगी	राजपाल प्रकाशन, दिल्ली	1961
6.	फौलाद का आकाश	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1966

उपर्युक्त कहानी संग्रह पुन: नये नामों के साथ चार जिल्दों मं प्रकाशित हुए हैं । जैसे --

(1) 'आज के साये' - सन् 1967

(2) 'रोयें रेशे' - सन् 1968

(3) 'एक - एक दुनिया' - सन् 1969

(4) 'मिले जुले चेहरे - सन् 1969

राकेश की सभी कहानियाँ निम्नलिखित चार भागों में प्रकाशित हुई हैं --

(1) 'क्वार्टर' राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1973

(2) 'पहचान' राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1973

(3) 'वारिस' राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1973

(4) 'एक घटना' राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1974

मोहन राकेश द्वारा चुनी गयी कहानियों के संग्रह निम्नांकित नाम से प्रकाशित हुए हैं --

(1) 'मेरी प्रिय कहानियाँ' - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1973

(2) 'संपूर्ण कहानी संग्रह' - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1984

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि राकेश जी ने कहानियाँ भी काफी लिखी हैं । उनकी कहानियों के संग्रह अलग - अलग नाम से अलग-अलग प्रकाशन से भी प्रकाशित हुए दृष्टिगोचर होते हैं ।

1.2.2 उपन्यास साहित्य -

मोहन राकेश ने कहानी के साथ - साथ उपन्यास साहित्य में भी अपना योगदान किया है ।

(अ) प्रकाशित उपन्यास -

(1) अंधेरे बंद कमरे - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - 1961

(2) न आने वाला कल - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - 1968

(3) 'अंतराल - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - 1972

(4) काँपता हुआ दरिया - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - 1998

(5) स्याह और सफेद - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - 1998

(आ) अप्रकाशित उपन्यास -

(1) हिरोशिमा के फूल

(2) नीली रोशनी की बाँहें

(3) कई एक अकेले

1.2.3 नाटक -

मोहन राकेश का नाम एक सशक्त नाटककार के रूप में लिया जाता है । उन्होंने अपने जीवन में बहुत कम (कुल साढ़े तीन) नाटक लिखे लेकिन उन्होंने एक सफल नाटककार के रूप में बहुत ख्याती पायी । उनके अब तक प्रकाशित नाटक कुल चार हैं ।

1.2.3.1 प्रकाशित नाटक -

(1) आषाढ़ का एक दिन - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1958

(2) लहरों के राजहंस - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - 1963

(3) आधे अधूरे - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - 1969

(4) पैर तले की जमीन - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1975

(अपूर्ण नाटक)

यह राकेश का अपूर्ण नाटक है जिसे राकेश के देहांत के बाद कमलेश्वर ने पूरा किया है ।

1.2.3.2 ध्वनि नाटक -

राकेश के 'रात बीतने तक' तथा अन्य आठ ध्वनि - नाटकों का यह संकलन राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली द्वारा सन् 1974 में राकेश की मृत्यु के पश्चात प्रकाशित किया गया । इनमें संग्रहित ध्वनि नाटक इस प्रकार हैं -

(1) रात बीतने तक

(2) स्वप्नवासवदत्तम

(3) सुबह से पहले

(4) कँवारी धरती

(5) उसकी रोटी

(6) दूध और दाँत

(7) आखरी चट्टान तक

(8) आषाढ़ का एक दिन

1.2.3.3 बीज नाटक -

राकेश ने ध्वनि नाटकों के साथ - साथ बीज नाटक भी लिखे हैं। वे इस प्रकार --

(1) शायद

(2) हं: !

1.2.3.4 पार्श्व नाटक -

राकेश ने एक पार्श्व नाटक भी लिखा है । वह है - (1) छतरियाँ

1.2.4 एकांकी -

(1) सत्य और कल्पना - 1949

(2) अण्ड़े के छिलके , अन्य एकांकी तथा बीज नाटक --

अण्ड़े के छिलके के अंतर्गत चार एकांकी हैं । वे हैं -

(1) अण्ड़े के छिलके

(2) प्यालियाँ टुटती हैं

(3) बहुत बड़ा सवाल

(4) सिपाही की माँ

1.2.5 कविता -

राकेश ने अपना लेखन कार्य कविता से ही आरंभ किया था । आठ - नौ साल की उम्र में ही उन्होंने संस्कृत, हिंदी में कविताएँ लिखी थीं । राकेश ने सन् 1944 में, 'दिन ढले' इस प्रथम फिल्म पट कथा में अच्छे गीत भी लिखे थे ।

'उन्नीसवाँ सिगार' तथा 'चाबूक' शीर्षक की उनकी दो कविताएँ 'सारिका' में प्रकाशित हुई थीं । 'कँवारी धरती' शीर्षक एकांकी में विजय नामक एक पात्र के माध्यम से कही गई राकेश की बहुत सुंदर कविताएँ भी उपलब्ध हैं।

1.2.6 अनुवाद -

उपन्यास, एकांकी, नाटक आदि के साथ - साथ राकेश ने अनुवाद पर भी अपनी लेखनी चलायी और अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का परिचय करवाया । राकेश ने संस्कृत के प्रसिद्ध महाकवियों के तीन नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया है ।

(1) मृच्छकटिक - 1961

(2) शाकुंतल - 1965

(3) स्वप्नवासवदत्तम - 1974

(4) पाँच परदे

(5) एक औरत का चेहरा

1.2.7 संपादन कार्य -

राकेश ने पुस्तकों के संपादन कार्य में अधिक आस्था नहीं दिखाई । किंतु पत्रिका के संपादन कार्य में उन्होंने अपनी जो योग्यता एवं श्रेष्ठता दिखाई है वह हिंदी में बेजोड़ है ।

(1) सारिका पत्रिका - 1962 -63

(2) आईने के सामने - 1965

(3) पाँच परदे

1.2.8 यात्रावृत्त -

राकेश ने यात्रावृत्तांत पर भी अपनी कलम चलायी है ।

(1) आखरी चट्टान तक - प्रगति प्रकाशन, दिल्ली -1953

(इसमें गोवा से कन्याकुमारी तक की यात्रा का वर्णन है ।)

(2) पतझड़ का रंगमंच

1.2.9 लेख -

राकेश ने दो दीर्घ लेख भी लिखे है । वे हैं

(1) रंगमंच और शब्द

(2) शब्द और ध्वनि

1.2.10 निबंध -

(1) बकलम खुद - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1974

(2) मोहन राकेश साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - 1975

1.2.11 डायरी -

मोहन राकेश की डायरी - राजपाल प्रकाशन, दिल्ली - 1985

1.2.12 जीवनी -

समय सारथी - 1972

1.2.13 रेखाचित्र -

(1) सत् युग के लोग

(2) दिल्ली रात के बाहों में

1.2.14 संस्मरण -

(1) परिवेश - 1967

1.2.15 बाल साहित्य -

(1) बिना हाड़ मांस के आदमी - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली - 1974

1.2.16 शोध कार्य -

राकेश ने 'दि ड्रैमेटिक वर्ड' नाटकीय शब्द पर सन् 1971 में नेहरू फैलोशिप पाकर शोध कार्य करना प्रारंभ किया, लेकिन यह शोध कार्य पूरा नहीं हुआ ।

निष्कर्ष -

राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी के साथ समझौता नहीं किया । उनका व्यक्तित्व अनेक सम - विषम घटनाओं से भरा हुआ था । राकेश में जबरदस्त आत्माभिमान, जिंदादिल और जीवन के प्रति अटूट आस्था रही है । उनके जीवन को समझना बहुत ही मुश्किल था । राकेश के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । इसी कारण उन्हें कम उम्र में ही कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा ।

राकेश ने अपने जीवन मे कभी भी स्थिर नौकरी नहीं की । इसी कारण उन्हें जीवन में अनेक नौकरियाँ करनी पड़ी । उनका इस्तीफा हमेशा उनकी जेब में पड़ा रहता था । राकेश को एक अच्छे घर की तलाश थी । वह अनीता से विवाह करने के बाद मिल गया । उनके जीवन में उनके मित्रों का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है । उन्हें प्रथम और दूवितीय विवाह में कभी वैवाहिक सुख शांती नही मिली । वैवाहिक जीवन में अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा । ईमानदार, स्पष्टवादी, स्वाभिमान, अच्छे मित्र, अहंवादी आदि उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

राकेश ने हिंदी भाषा, भारतीय लेखक और भारतीय साहित्य का हमेशा सम्मान किया । उन्होंने हिंदी लेखकों को एक नई दिशा प्रदान की । राकेश को साहित्यिक बनाने में उनके माता-पिता का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण है । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया । उनकी साहित्य यात्रा अमृतसर से शुरू हुई और दिल्ली में उनका अकाली निधन हुआ । निष्कर्षत: स्पष्ट है कि राकेश बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यिक सिद्‌ध होते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ – सूची

1. गिरीश रस्तोगी - मोहन राकेश और उनके नाटक, पृष्ठ -35

2. विमला कुमारी पंड़िता - उपन्यासकार मोहन राकेश (अन्तराल के विशेष संदर्भ में), पृष्ठ - 1

3. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ - 6

4. वही, पृष्ठ - 58

5. सं. नेमिचंद्र जैन - 'नटरंग' त्रैमासिक पत्रिका,अक्टूबर-दिसंबर,1992 पृष्ठ -44

6. सं. जयदेव तनेजा - एकत्र, पृष्ठ -25

7. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ -134

8. अनीता राकेश - चंद सतरें और , पृष्ठ - 99

9. सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी - मोहन राकेश और उनके नाटक एक अधुनातन विश्लेषण, पृष्ठ - 23

10. डॉ. मीना पिंपलापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार, पृष्ठ - 21

11. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ - 252

12. वही, पृष्ठ - 130

13. अनीता राकेश - चंद सतरें और , पृष्ठ - 75

14. वही, पृष्ठ - 92

15. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ - 12

16. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ - 216

17. अनीता राकेश - चंद सतरें और, पृष्ठ - 80

18. वही, पृष्ठ - 89-90

19. डॉ. गोविंद चातक - आधुनिक नाटक का मसीहा, पृष्ठ - 31-32

20. डॉ. मीना पिंपलापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार, पृष्ठ -27

21. अनीता राकेश - चंद सतरें और, पृष्ठ - 83

22. मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी, पृष्ठ - 309

23. डॉ. सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी - मोहन राकेश और उनके नाटक एक अधुनातन विश्लेषण, पृष्ठ - 31

24. अनीता राकेश - चंद सतरें और, पृष्ठ - 101-102

25. गिरीश रस्तोगी - मोहन राकेश और उनके नाटक, पृष्ठ - 47

26. जीवन प्रकाश जोशी - नाटककार मोहन राकेश, पृष्ठ - 98

27. डॉ. गोरधन सिंह - मोहन राकेश की कहानी यात्रा, पृष्ठ - 35

28. कृष्ण कुमार - हिंदी कथा साहित्य परख और पहचान, पृष्ठ -81

29. वही, पृष्ठ - 81